Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कीर्ति केसर

मुझे आवाज़ देना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कीर्ति केसर के आलोचना कर्म से मेरा पुराना परिचय है। आलोचना कर्म में थोड़ी महारत हासिल कर चुका लेखक जब कविता लिखता है तो चिंतन या विचार से संबंध होने के कारण उसका भाव या संवेदन व्यर्थ की भावुकता में नहीं बिफरता। कीर्ति केसर की कविता में मुझे भाव और चिंतन, संवेदना और विचार की कुछ ऐसी ही बानगी मिली, इसीलिए उसकी आलोचना का ज़िक्र करना पड़ा।

कीर्ति केसर की कविताएं मैं तब से पढ़ रहा हूं जब से उसने लिखना शुरू किया है। आलोचना से कविता की ज़मीन पर आने में थोड़ा समय तो लगता है लेकिन कीर्ति केसर ने जब कविता लिखना शुरू किया तो निरंतर लिखकर उसे अर्जित किया है। इन कविताओं में साहस और पीड़ा, भोग और संन्यास, प्रणय और स्वार्थ, मरण और अमरता, नैतिक और अनैतिक, सुन्दर और असुन्दर को एक साथ निभाने की आकांक्षा और झेलने का माद्दा भी है। क्या यह विरोधों में सामंजस्य बिठाने की आकांक्षा है या नारी जीवन की विडंबनापूर्ण यातना को स्वर देने का प्रयत्न है, इसके उत्तर के लिए इन कविताओं के गहन अध्ययन की अपेक्षा है।

यह सही है कि कीर्ति केसर की कविताओं में सामाजिक, राजनैतिक स्थितियों और ब्यौरों की भरमार है। पंजाब में आतंकवाद के इतिहास को भी कवयित्री ने कविताओं में दर्ज किया है। लेकिन यह इतना भर नहीं है। इन कविताओं के भीतर झांकें तो पाएंगे कि कविताएं जितनी बाहरी हैं उससे कई गुना अधिक बाहर के संदर्भ में आंतरिक द्वन्द्वों और संतापों की कविताएं हैं। बाहर जहां भीतर का हिस्सा बन गया वहां कीर्ति केसर की कविताएं एक ऊंचाई को छूती नज़र आती हैं। उसकी कई कविताओं पर विस्तार से लिखा जा सकता है ।

नरेन्द्र मोहन
नई दिल्ली

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अतिथि शिक्षक
के लिए

क्रीमिलेयर
13-3-05

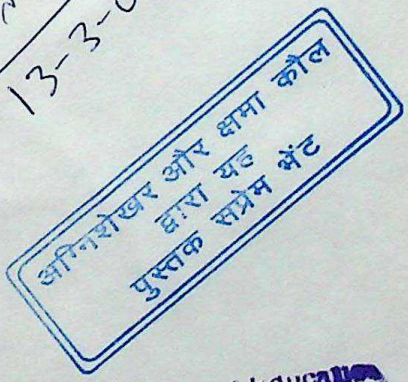

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc No. 4954
Dated 27.12.2023

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

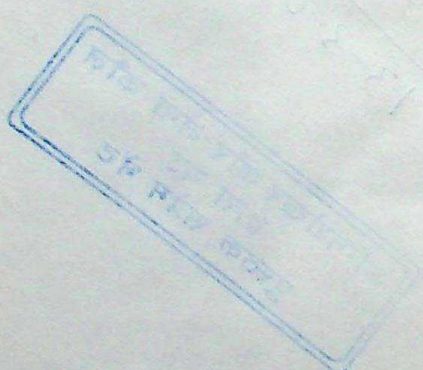

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुझे आवाज़ देना

कीर्ति केसर की कविताएँ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अभिव्यंजना : नयी दिल्ली

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुझे आवाज़ देना

कीर्ति केसर

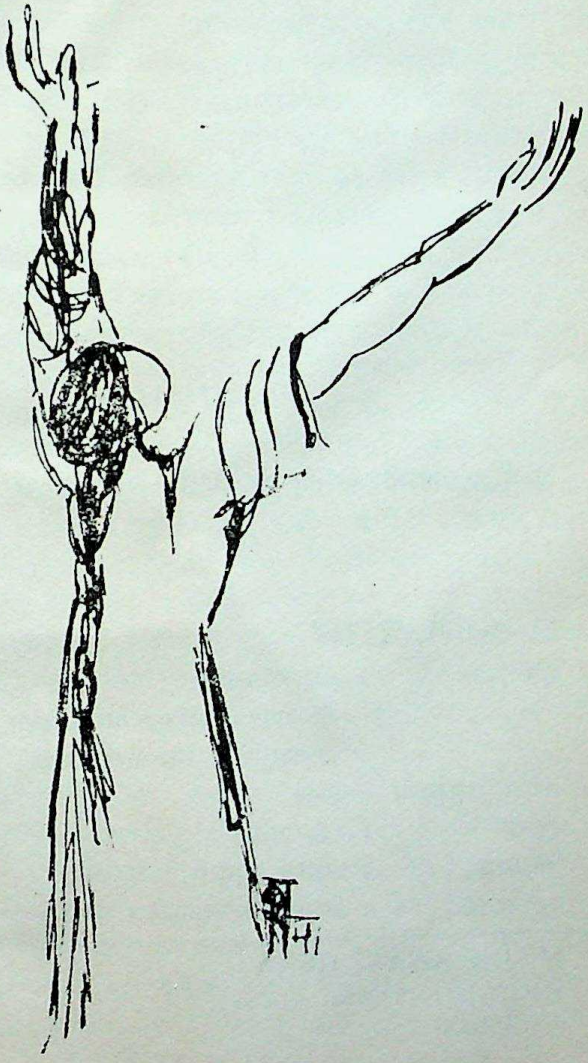

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ISBN-817464-034-7

हिन्दी अकादमी, दिल्ली के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित

© कीर्ति केसर

प्रकाशक : अभिव्यंजना
बी-70/72, डी.एस.आई.डी.सी. काम्पलेक्स,
लारेंस रोड, दिल्ली-110035
प्रथम संस्करण : 2002
मूल्य : 100 रुपये
आवरण : ज्योति सहोता
मुद्रक : अमृत एन्टरप्राइजेज़, लारेंस रोड, दिल्ली-35

MUJHE AWAAZ DENA
Peoms by Kirti Kesar
Rs. 100.00

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपनी बात

लेखन संवेदनशील, चिंतनशील और जागरूक व्यक्ति की आवश्यकता है। जिस समाज में वह रहता है वह उसके सुख-दुख, उल्लास-विषाद, गुण-दोष के समुच्चय का हिस्सा होता है। उसके भौतिक एवं स्थूल व्यवहारों का दर्शक और सूक्ष्म मानसिक व्यवहारों का भोक्ता भी होता है। अभिव्यक्ति की योग्यता रखने वाला व्यक्ति समाज और खुद व्यक्ति के सुखों और दुखों के कारणों के प्रति सचेत होता है अतः उसका लेखन समाज की सामाजिकता का पोषक, पहरेदार और रक्षक भी होता है। सामाजिकता को जब जहां ख़तरे पैदा हुए संवेदनशील ईमानदार लेखक वचन और कर्म से उसके हित साधक के रूप में उन खतरों के खिलाफ़ खड़े हुए हैं। उसके संग्रह के लिए, उसके बचाव के लिए उन्होंने सराहनीय संघर्ष भी किए हैं। यह लेखकीय कर्म अनेक विधाओं के रूप में प्रकट होता है या यह कहिए कि संवदेनशील सामाजिक के मानसिक और भावानात्मक संसार का समुच्चय कहानी, कविता, नाटक, निबंध, आलोचना आदि विधाओं में प्रकट होता है। कविता संभवतः सबसे पुरानी और लोकप्रिय विधा है।

मैंने बाकायदा लेखन आलोचना से शुरू किया था। शोध ने मेरी आलोचना को व्यापक अध्ययन और चिंतन दिया। समाज शास्त्र ने मुझे सामाजिक परिवर्तन और उसकी गतिशीलता का परिचय दिया, मनोविज्ञान ने विश्लेषण का महत्व बताया, मार्क्स ने भौतिक जीवन की बुनियादी ज़रूरतों के लिए पूरे समाज के सुखों और हितों के बारे में सोचने की अक्ल दी। अस्तित्ववाद ने व्यक्ति स्वतंत्रता के दायित्व का नैतिक बोध दिया, इतिहास ने भारतीय समाज के वर्तमान को समझने और भविष्य की दिशाओं का अनुमान लगाने के लिए अतीत का परिचय दिया और आधुनिकता ने वैज्ञानिक (तर्कशील) जीवन दृष्टि दी। धार्मिक आस्थाओं तथा आस्तिकता ने निराशाओं, असफलताओं, पराजयों और प्रतिकूलताओं के सच को स्वीकारने की शक्ति दी और साहित्य-अध्ययन ने सद्प्रेरणाओं से मेरे सद्संस्कारों को पुष्ट किया। इस प्रकार मेरे लेखन को सामाजिक जीवन दृष्टि का पुख्ता-ठोस आधार मिला।

साहित्यालोचना ने मुझे छोटी सी पहचान दी। आलोचना का भी रचनात्मक धर्म होता है। मैंने इस तार्किक धर्म को जज़्बात और उसूल के संतुलन के साथ निभाने का भरसक प्रयास किया। मेरे इन प्रयासों को बहुत से रचनाकारों ने सराहा, अपनाया और गहरा विश्वास भी दिया। एक समय ऐसा भी आया कि लगने लगा पराई कृति के सहारे अपनी रचनात्मकता को खड़ा नहीं किया जा सकता, दूसरे पूरे साहित्यिक परिवेश ने ही यह अहसास दिला दिया कि आलोचना दूसरे दर्जे का काम है। और 1980 में मैं जब पंजाब आई तो जीवन के बहुत से विपर्यय अनुभव होने लगे। यहाँ स्वस्थ आबोहवा, उर्वर मिट्टी, सक्रिय, कर्मठ, महत्वाकांक्षी और निरंतर गतिशील,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रगतिशील जीवन, खुला-खुला सा वातावरण और साथ ही सिर उठाते हुए कट्टरवाद-हिंसा-प्रतिहिंसा और फिर अलगाववाद का आतंकवाद, उसके बदले में स्टेट की षड्यंत्रों भरी हठधर्मिता और राजनैतिक दिवालियापन। मनुष्यता का यह पतन समाज के बौद्धिक एवं चारित्रिक पतन की अलामत थी। इस अनुभव ने मेरे अंतःमन को छुआ, मेरे विचार जगत में व्याकुलता पैदा की। अपनी सभ्यता और संस्कृति के सौंदर्य और मनुष्य स्वभाव में बढ़ती कुरूपता, स्वार्थों के निरंतर तंग होते घेरों में सिकुड़ते सामाजिक रिश्तों के अहसास ने मेरी चेतना में उद्विग्नता पैदा की। विघटित होते हुए पारिवारिक और मानवीय संबंधों ने मुझे संगठन की आवश्यकता समझाई। मानव-हृदय से टूटते मानवीय संस्कारों के तंतुओं ने मुझे सुसंस्कारों को संभालने का आदेश दिया। राजनीति और अर्थतंत्र की मिलीभगत ने संस्कृति के व्यवसायीकरण का जो अभियान शुरू किया है उससे मनुष्य के विवेक के चुक जाने की भयावह स्थितियों की कल्पना ने मुझे अक्सर आतंकित किया है। बढ़ते अपराध, बढ़ता भ्रष्टाचार भी बहुत कुछ इस उपभोक्ता संस्कृति से जुड़ा हुआ है अब इसमें कोई संदेह नहीं रह गया। इन वाह्य और आभ्यंतरिक दबावों ने मुझे आलोचना से पत्रकारिता और कविता की ओर मोड़ा।इ मेरी कविताओं की विषय-सामग्री प्रयोजन और संयोजन भी इन्हीं मनःस्थितियों के आस-पास हुआ है। मेरे पहले कविता-संग्रह में इस क्षेत्र के ऐतिहासिक दबावों का प्रभाव बहुत कम था। कारण वे अनुभव तब तक कविता के अनुभव नहीं बन पाए थे। आतंक और भय जैसे अहसास बाद में मानस में इतने गहरा गए कि कोमल भाव की अनुभूतियों में भी वे स्वतः ही प्रकट हो गए हैं।

इस धरती की संतानों के बीच रहकर ही मेरी कविताएं मुझे प्राप्त हुई है। मेरी कविताओं पर आरोप था कि वे रोमांटिक है उस हालत में जब लोग मर रहे हैं। मैं यह मानती हूँ कि कविता काल-सापेक्ष होते हुए भी काल से आगे चलती है। जीवट भरे जीवन की मानसिकता ऐसी ही होती है। कविता यदि जीवन की निरंतरता के साथ चलकर उसकी संपूर्णता को देखती है तो कोई भी क्षेत्र उसके लिए किसी भी समय में वर्जित नहीं होता। मृत्यु का सत्य जन्म के साथ ही खड़ा होता है। संघर्ष जीवन के लिए होता है मृत्यु के लिए नहीं, रोया जीवन के लिए जाता है मृत्यु के लिए नहीं। युद्ध और प्रेम सदा साथ रहे हैं। मर्यादाओं के पतन में से रामचरित मानस का उत्थान होता है। शोषण और अत्याचार की आंधियों में से ही श्री गुरु ग्रंथ साहिब का उदय होता है, युद्धों में रासों की रचना होती है। वीभत्सता में से मोनालिजा का सौंदर्य या सोभा सिंह की सोहनी की परिकल्पना साकार होती है। यथार्थ के साथ मेरी कविता का संबंध भी कुछ ऐसा ही इतना ही बने यही मेरी इच्छा भी है।

वस्तुतः मैं स्थूल यथार्थ को रचना में उतारने की पक्षधर नहीं हूँ। भाव संवेदना विचार और संस्कार का पराभाव यह सारे तत्व मेरे अनुभव की भूमि पर एकत्र होकर किसी कविता का छोटा-बड़ा आकार बनते है। एक ही रचना को अंतिम रूप देने के लिए भिन्न-भिन्न कोणों से परखना होता है, अपना आलोचक आप होना होता है। रचना तैयार हो जाती है तो एक आनंदावस्था का आभास होता है पर इसकी आयु ज़्यादा नहीं होती। आदमी को जीवन खंडों में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मिलता है पर उसकी कामना सर्वांग सुन्दर सुखी जीवन की होती है। अतः टुकड़े-टुकड़े जोड़कर वह जीवट के साथ अपने आधे-अधूरेपन को पूरा करने का प्रयास करता है। यह प्रयास मुझे आकर्षित करता है—महसूस करती हूँ कि यह स्थिति मेरे भीतर स्थापित है। बाहर से उसे दीप्ति मिलती है और फिर रचनाकर्म की पीड़ा शुरू होती है। तब तक चलती है जब तक कोई रचना आकार प्राप्त नहीं कर लेती।

मैं बिना प्रयोजन के कोई काम नहीं कर पाती—कविता भी नहीं। मुझे पूरा जीवन चाहिए, स्वस्थ, सुन्दर, सहज, सचेतन और कर्मठ-आनंदमय। वह भी एकांगी नहीं सर्वांगी, एकाकी नहीं समाज के बीच। असुन्दरता के बीच मैं सुन्दरता की कल्पना करती हूँ। अनैतिकता भोगते हुए मुझे नैतिकता का अभाव महसूस होता है। अतः मेरे लिए ये कविताएं आधे-अधूरे जीवन को पूरा करने वाले टुकड़े हैं। स्थित और संभावित के परिचय पत्र हैं तो काम्य-प्रयोजन की सुनहरी दीप्तियां हैं। भाव-सौंदर्य कविता का प्राण होता है। किन्तु रचना भावुकता की दलदल में फंस गई तो अपना प्रयोजन सिद्ध नहीं कर सकेगी। उसके लिए विचार का नियंत्रण आवश्यक है। केवल विचार भी बौद्धिक आवारगी में संलिप्त हो सकता है अतः भाव और विचार का संतुलन मुझे रुचता है। कभी-कभी सोचती हूं कि वेदव्यास ने भी शायद केवल बौद्धिक सोच को लंगड़ी सोच माना है तभी शकुनि को लंगड़ा बनाया है। उसका केवल दिमाग ही काम करता है। दिल केवल रक्त संचार करने वाला पिण्ड मात्र है। वेदव्यास की दृष्टि मुझे प्रभावित करती है। सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम् का सिद्धांत मुझे सार्थक लगता है। अतः भद्दे गालीनुमा हिंसक शब्दों का कविता में प्रयोग मुझे आतंकित करता है। जीवन में वैयक्तिता और सामाजिकता का समीकरण बनाए बगैर रचना के प्रभाव क्षेत्र का विस्तार नहीं हो सकता इस तथ्य का ध्यान भी मुझे बना रहता है।

कुल मिलाकर मेरी नज़र में मेरी कविताएं जीवन के सुख—दुख, रस-रंग, सोच-विचार, अनुभूतियों और संघर्षों के प्रतिरूप हैं। प्रबुद्ध पाठकों और विवेकशील आलोचकों से इन रचनाओं को संग्रह रूप में एकत्र करने की जो प्रेरणा मिली उसी के कारण यह **मुझे आवाज देना** संग्रह तैयार हो सका। लगभग सभी कविताएं किसी न किसी माध्यम से श्रोताओं तक पहुंच चुकी हैं। उनसे मिली प्रशंसा व निंदा दोनों ही मेरी उपलब्धि है। यह मेरी दूसरी भेंट है। अतः पाठकों की सहमति-असहमति और सम्मति की मुझे प्रतीक्षा रहेगी।

कीर्ति केसर

संपर्क :

(1) एन. 59, ग्रेटर कैलाश II
नई दिल्ली-110048

(2) 1086 ई - गोविन्द गढ़
जालंधर-144001

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुक्रम

- प्रेम पत्र / 41
- तुम्हीं कहो / 44
- गोधूलि / 47
- सपना / 49
- ये लोग / 50
- स्मृति शेष को / 52
- इक्कीसवीं सदी के नाम / 56
- एक खत मिर्जा ग़ालिब के नाम / 61
- कहानी सुख की क्यों नहीं होती / 64
- अभिशप्त / 66
- सन्हे भीखी के नाम / 68
- क्षुब्ध / 74
- सुनो मतदाता / 76
- प्रश्नों से घिरा प्रजातंत्र / 78
- बुजदिल / 83
- थोड़ा इंतजार / 85
- सदा याद रखना / 87
- सिद्ध मैं ? / 91
- मेरे लिए कविता /9
- मुझे आवाज़ देना / 11
- एक दोस्त के नाम / 13
- आज रात-1 / 15
- आज रात-2 / 16
- अहसास / 17
- आह्वान / 19
- अजनबी पल / 23
- रस्म / 25
- स्पंदन / 27
- उलाहना / 28
- साथ-साथ / 29
- वे आँखें / 31
- संरचना / 33
- सरगोशियाँ-1 / 36
- सरगोशियाँ-2 / 37
- आखिरी इच्छा / 38
- खामोशी-1 / 39
- खामोशी-2 /40

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरे लिए कविता

मेरे लिए कविता
अहिंसा है
अनुराग है
योग है उपवास है
मेरे लिए कविता
भोग में संन्यास है

मेरे लिए कविता आभार है
उस दिव्य शक्ति का
जिसने मुझे
भूख दी
अदम्य इच्छाएं दीं
पर कपाल को
जाने नहीं दिया
मेरे उदर की आग में

फूल
मेरे लिए फूल हैं
आकाश-धरती
समुद्र-मौसमों का संतुलन
और चांद मेरी आस है
अस्मिता से फूटती
कविता मेरे लिए
निज का अटल विश्वास है।

(नवम्बर 1986)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुझे आवाज़ देना

नीली झील के
सीने पर
जब लहरों का झुरमुट हो
पूरे चांद की
भीगी सी आधी रात
आकाश में तारे छिटके हों

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उमड़े कोई उमंग सी
दिल के
सूने से किसी कोने में
उसे महसूस करना
और मुझे आवाज़ देना

किसी शाम
मंदिर का शंख
जब उदास कर जाए
रिश्ते-नाते
तुम्हें व्यर्थ से लगने लगें
खिसक जाए विश्वासों के आधार
आस्था की
सभी बुनियादें दरकने लगें
धुंधले हो जाए
चारों दिशाओं के संकेत
कुछ न कहना
तुम मुझे आवाज देना

तुम्हारे पांव
जब टूटन की
देहरी पर लड़खड़ाने लगें
मन-पंछी
बसेरे को जब तरसने लगे
घनी तुम्हारी पलकों पर
आंसू की लड़ियां थरथराने लगें
कुछ न करना
तुम मुझे आवाज़ देना।

(जुलाई 2000)

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक दोस्त के नाम

ऐ दोस्त
मुझ से कोई
आस न रखना
कोई रिश्ता न जोड़ना
मैं जीवन की
जलधारा के
किनारे पड़ी एक चट्टान हूँ

यह और बात है
मुझ में दबी है वह आग,
जिसकी आँच
दूर तक जाती है
यह और बात है कि
मेरे आकार में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दाएं-बाएं पड़ी दरारों में
हरियाली लहलहाती है

यह और बात है कि
धारा का जल
मुझे भिगोता है
मेरे जिस्म पर
काई की सूरत
कुछ घाव सुलगते हैं
और खुर गया है
जलधारा में मेरा खुरदरापन

ऐ दोस्त
मुझे भावुकता के फूल
अर्पित न करना
अपनी आंखों से
गर्म पानी की
कोई बूंद भी
मुझ पर न गिराना
क्योंकि
दहकते अंगारों पर
कोई बूंद
ओस का मोती नहीं बनती

ऐ दोस्त
मुझ से
कोई आस न रखना
मैं जीवन की
जलधारा के
किनारे पड़ी चट्टान हूं।

(जून 1992)

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आज रात-1

नीले-नीले
नरम-नरम
तेरे ख्याल
आते रहे
देर तक

तितली के
रंग-बिरंगे
रेशमी पंख
फड़फड़ाते रहे
देर तक

तेरे आने और
चले जाने की कहानी
अपने आपको
हम सुनाते रहे
देर तक।

(जुलाई 1992)

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आज रात-2

आज रात समुद्र देखा
अनंत-विशाल
दूर तक फैला हुआ
असीम
आसमान पर
चांद मुस्कुराता रहा
चांदनी
लहरों पर झूलती
हंसती रही

स्वप्न टूटा
बीहड़ रेगिस्तान में
मेरी जान
मोमबत्ती सी
पिघलती रही
तमाम रात।

(जुलाई 1992)

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अहसास

कुछ दूर तक
वह मेरे साथ चला
कुछ बीते पलों को
उसने पुकारा
स्मृति की
बंद खिड़कियों पर
उसने
धीरे से दस्तक दी

फिर अपनी
बादामी आँखों का
तरल उजाला
चारों दिशाओं में
बिखेर दिया
उजली लकीर सा
कुछ चमका
मेरे भीतर के अंधकार में

मन खिला
दूज के चांद सा
मुस्कुराया
कायनात का
हर गोशा सुनहरा हो गया

मैंने जाना
आतंक और अविश्वास
की सलीब पर
टंगे मैं
संसृति की तमाम
खुशबुओं के साथ जिन्दा हूँ।

(मार्च 1993)

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आह्वान

पता नहीं
किसका वरदान था
किस की दुआ थी
जो तुम्हारे रूप में
साकार हुई
सिर से पांव तक
सहज सुन्दरता की
महकती काया
किसी पवित्र पाप की माया
जब तक तुम साथ थे
कुविचार मन में भी न आया
बस रूपमान था

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भय से भरी नगरी में
सुख-शांति का
इक सुनहरा सपना
तुम्हारी काया सा उज्ज्वल
तुम्हारे होठों सा मधुर
तुमसे भी कहावर
तुम्हारी वाणी सा चुम्बकीय
झूठ के बवंडर में
सृष्टि का शाश्वत सत्य था मेरा सपना

जीवन की सूखी सी नदी में
तुम जलधारा लेकर आए
बादल बन कर बरसे
तारे बन कर चमके
दूधिया चांदनी की तरह बिखरे
मेरे आशंकित आतंकित अंबर पर
रात रानी की खुशबू
से महके
मेरे उजड़े तन-मन पर

मोह के तंतु इतने उलझे है
मालूम नहीं था
जब तक पास थे तुम
स्नेह के बंधन
ऐसे अटूट है
मालूम नहीं था
जब तक अजनबी थे तुम

क्यों आए तुम
मेरे अधूरेपन में
पूरे की चाह जगाने
बंट गए-छूट गए
भूले-बिसरे
रिश्तों की साबुत याद दिलाने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उलाहना है यह
कोई दोष
नहीं है तुम पर

अपनी सीमाओं में
सिमट गई मैं
किसी मिथ्या भय से
आगत की
अनहोनी कल्पना से
सिहर उठी मैं
फिर अपनी लड़ाई
अपने आप से लड़कर
विजयी हुई मैं
पुलकित मन सोचता था
पाएगा तुम्हारा परिचय विशेष
फिर न रह जाएगी
कोई कुंठा अशेष
तुम थे दाता मेरे
विधाता नहीं बन पाए

तुम्हारा देय था मेरे लिए
तुम अपनी गांठ में
बांधकर चले गए
बेशक
आंचल मेरा ही छोटा था
दान तुम्हारा
छोटा नहीं था
खरा था
खोटा नहीं था
बड़े से डर गई मैं
खरे से विचलित हुई मैं

पर तुमने
क्यों किया ऐसा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुझे या अपने आपको
दंड देने जैसा
मन में पछतावा
दिन-रात साथ लिए
तुम्हारी धुन में
सिर धुनती हूं मैं
तन को छलती
मेधा को मथती हूं मैं
जीव-जगत के
चिरंतन सत्य के सामने खड़ी
आकाश का
विस्तार चेतना से नापती
तुम्हारा आवाहन करती हूं मै

तुम आओ
पुरुषार्थ से समर्थ
परमार्थ से भरपूर
पर पीड़ा से संवेदित
स्नेह स्पंदित
अपना अस्तित्व लिए
मेरे पास आओ
दाता नहीं
विधाता बन कर आओ

मेरे सूखे घट
सजलता से भर दो
पाप बोध और हीन भाव को
निज गरिमा से
गरिमामय कर दो
आओ, तुम आओ
दाता नहीं
विधाता बन कर आओ।

(अगस्त 1991)

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अजनबी पल

किसी खंडहर की
सीढ़ियां चढ़ते हुए
एक अजनबी पल में
ऐ दोस्त
अपनी हथेली में
मेरी हथेली को
दबाना तेरा
मेरे भीतर
मानव प्रकृति की
उस सुन्दरता को
मूर्तिमान कर गया
जिससे
काव्य की रचना होती है

सुन्दरता, जिससे
काव्य को रस
रस को सुर
ताल को लय
और लय को
गति मिलती है

मन का खाली घट
सूरज की ज्योति
चांदनी की ठंडक जैसी अनुभूति से
भर उठता है
बौना व्यक्तित्व
एकाएक
बड़ा हो जाता है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विस्तार के आकाश में
तुच्छता डूब जाती है

ऐ दोस्त
परिचय की शेष
मगर लम्बी उम्र
मैंने उस
अजनबी पल की
तलाश में गुज़ारी है...।

(अक्तूबर 1983)

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रम

विदा के वक्त
गले भी नहीं लगाया
यह
तुम्हारी शिकायत है
और मैं
तृष्णा के
उस पड़ाव पर हूं
कि तुम से
भिन्नता
महसूस ही नहीं होती
यह मेरी विवशता है
तृष्णा का अंत
शायद
'तृप्ति' में होता है
शायद
'विरक्ति' में भी होता है
तृप्ति-आनंद रूपा
विरक्ति-चिंतन रूपा
तुम तृष्णा में 'जड़'
मैं तृप्ति में 'चैतन्य'

आओ चलें
इस अनमोल जीवन के
अनंत सफर में
बढ़ें आगे निरंतर
क्षितिज की ओर
अ-मृत
जीवन की तलाश में।

(जनवरी 2000)

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्पन्दन

मेरे कांधे पर टिकी
तेरी गर्म हथेली
खंडहर के द्वार पर
सावन की फुहारों से धुली
ज़िन्दगी जैसे
दस्तक देती सी लगी है

मेरे आंचल के छोर को
उंगली पे लपेटे
खामोश खड़े हो तुम
बोलती सी नज़र
इक शोर भरी
कसक जागती सी लगी है

इक आग सी लगी है
धरती पे मेरी
सहम का सूखा भी पड़ा है
झरने सी झंकारमयी
मुस्कान तेरी
किसी गंगा के लिए
प्यास जगाती सी लगी है।

(जुलाई 1982)

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उलाहना

यूँ तो उम्र बीत गई
कड़ी धूप में
पर इंतज़ार रहा
तेरे आंचल की
उस छांह का
जो कभी
न हुई मेरे लिए

डाकिए के आने से
मुझे कोई सरोकार नहीं
पर इंतज़ार है
तेरे उस ख़त का
जो तूने
कभी न लिखा मेरे नाम

ऐ दोस्त
आखिरी उम्र में भी
इन्तज़ार है मुझे
कि तू आए
और ले जाए
वे महकते हुए
आसमानी सपने
जो आज भी हैं
मेरे पास, गुनाहों की तरह।

(मई 1991)

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

साथ-साथ

हादसे थे
कि राहों की तरह
चलते रहे
मेरे जीवन के साथ-साथ।

वक्त था
कि तेरी याद सा
ठहर गया
दिल की धड़कन के साथ-साथ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

साए थे
तेरे ग़रूर के
चलते रहे
मेरी क़िस्मत के साथ-साथ।

रोशनी थी
जो चली गई
तड़पा किया धुआं
बुझते चरागों के साथ-साथ।

चुपचाप यूं
खड़े हैं पेड़
लहरों की कोई
बात सुने किनारों के साथ-साथ।

आंसू था
या कोई ख़ार
उलझ गया
मेरे दामन के साथ-साथ।

इबादत भी अब
होती है यूं
जैसे कोई जिए
अपने गुनाहों के साथ-साथ।

डर तो था
डूब जाने का पर
बहती रही
'कीर्ति' उफ़नते धारों के साथ-साथ।

(सितंबर 1988)

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वे आंखें

कई बरस पहले
देखी थीं
वे बड़ी-बड़ी
बदामी रंग की
धनुषाकार, चमकदार आंखें

चेहरा याद नहीं
पर यादों में रही हैं
वे बड़ी-बड़ी
चमकदार आंखें
बांटती थीं
कभी अपनत्व निरंतर
कभी-कभी
भस्म कर देने वाली
रौद्र की चिंगारियां

और कभी
ममता भरा विस्तार लिए
भर देतीं
अपने और पराए
अन्तःकरण का खालीपन

हां, याद है
वे बादामी रंग की
भारी पलकों में
जगमगातीं
कभी सहज
कभी सजल
धनुषाकार, चमकदार आंखें।

(दिसम्बर 1999)

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संरचना

जब से होश संभाला है
यही देखा, यही सुना
यही जाना है
कि मेरा वजूद है
सिर्फ उनकी
इच्छा के अनुसार
आवश्यकता के अनुरूप
जिन्होंने मुझे
अपने लिए रचा है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इनमें शामिल हैं
वे सभी संबंध
जिनका जन्मसिद्ध
अधिकार है मुझ पर

अधिकारों के
इस घेरे में
संबंधों के दायरे में
अक्सर मेरा
दम घुटता है

तब बहुत अच्छा लगता है
कहीं चले जाना
निपट अकेले ही
इन दायरों के उस पार
किसी अनाम
संबंध के पास
चाहना, अपने आपको
या अपने जैसे
किसी आकार को
छूना अपनी
सुप्त भावनाओं को
और दुलारना
मरणासन्न आकांक्षाओं को
अंधेरी परतों तले
दबी चाहतों को कुरेदना

फैलाकर बांहें
नंगे पांव
किसी टीले पर
खड़े होकर
दूर दिशाओं में
खो गए सपनों को
आवाज़ देना
बहुत सुखद लगता है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तब होता है
यह संसार अपना दूर तक असीम
बंधनहीन विस्तार
चेतना का, संवेदना का
अमृत बनता है तब
जीवन में पीया गरल
तरल सा होकर
अंतःकरण से
कुछ रिसने लगता है

आंसू सा, लहू सा
जिसे समेट लेते हैं
कलम से बनते शब्द
अपने अर्थों में
अपनी टंकार में
व्यंग्य में या झंकार में

तब मेरा वजूद
हो जाता है
कर्म से, वाणी से
विकार मुक्त, आकार मुक्त
तरल सी कोई संरचना

बहुत सुखद लगता है तब
अपने साथ रहना
अपनी सुगंध के साथ
दूसरों के बीच रह कर
जीना और अमर हो कर
मरने की कल्पना करना।

(मार्च 1982)

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

, Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सरगोशियाँ-1

दिन और रात
बदल गए
फूल और पात
बदल गए
बदल रहे है
मौसमों के पैरहन
बदलो तुम भी
बाहर निकलो
केंचुल से
चलते हुए वक्त का
साथ निभाने के लिए।

(अप्रैल 2001)

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सरगोशियाँ-2

कोई भी
कुछ भी
इस दुनिया में
नहीं रहता
सदा एक सा।
देखना
कभी दोस्त
बेईमान हो जाएंगे
और कभी
दुश्मन भी
मेहरबां से
नजर आएंगे।

(अप्रैल 2001)

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आखिरी इच्छा

फूलों पर
मंडराती
तितलियों की तरह
या नीम को
छूकर निकलते
हवा के
झोंके की तरह
निःभय, निःद्वन्द्व
और निःविकार होकर
जी लेना
उम्र का एक दिन
कोई भी एक दिन
यही है, यही है
आखिरी इच्छा मेरी।

(अप्रैल 2001)

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ख़ामोशी-1

वह मुझे
बरसों से जानता है
देखता है लगातार
आम लोगों से
नज़रें बचाकर
मैंने उसका
पता नहीं पूछा

इस डर से कि
वह इंतज़ार करेगा
अपने उन ख़तों के
जवाब का
उसकी उनींदी निगाहों ने
जो अनेक बार
लिखे हैं
मेरी उदास...
बेचैन भटकनों के नाम।

(मई 1992)

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खामोशी-2

पतझड़ की
अलसाई-उदास
रुत में
हरे पत्तों का
पीले पड़ना
दरख्तों से
टूट कर गिरना
हवा के गुस्ताख
झोंके से
दूर तक बिखरना
देखते-देखते
हमें गुज़रा बसंत
बहुत याद आया।

(जून 1994)

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रेमपत्र

जब
तुम्हारे होंठों को
पहली बार छुआ
मैंने जाना
मैं कवि हूं
मुझ में
मधुर गीत जीवित है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरे अंकुर से
जब तुम्हारे आंचल में
पहली कली खिली
मैंने जाना
मैं भी
सिद्धहस्त शिल्पी हूं

और
जंगल की हवाओं पर
मन चाहे
चित्र बना सकता हूं

प्रणय के इस गणित में
तुम, माध्यम बनीं
मेरे परिचय का
मेरा अंहकार
सिद्ध हो गया

तुम्हें, छलूंगा नहीं
क्योंकि मैं
प्यार करता हूं
तुम्हारे उस
सामर्थ्य को
जो मेरे सामने
विजयी दर्प के साथ
खड़ा होता है

वह जाने-अनजाने
स्मित रेखा से
मेरी असमर्थता को
रेखांकित कर जाता है।

(अगस्त 1983)

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम्हीं कहो

बीच बहस में
बुलाया गया मुझे
महिला प्रतिनिधि के रूप में
कि पुरुष औरतों पर
जुल्म क्यों करते हैं?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम्हीं कहो
कि मैं क्या कहूं
पुरुष तुम हो
जुल्म तुम करते हो

सुनो
मेरा उत्तर वही है
कि तुम ज़ालिम हो
तुम्हारा स्वभाव है जुल्म
उसे तुमने
अपना अधिकार मान लिया है
अधिकार को भोगते हुए
पौरुष का पर्याय
बना लिया है तुमने

मैं सहती हूं
कभी लाचारी में
कभी संस्कारवश, भयवश
सहनशीलता की संस्कृति
तुम्हीं ने दी है मुझे
और वह है तुम्हारी
गौरवशाली परंपरा
और मेरी विवशता
मर्यादा पुरुषोत्तम के
युग से आज तक
वह फलती-फूलती आई है
अमरबेलि की तरह

याद करो
मेरा वरण था अर्जुन
'पांच अर्जुन' मेरे वर बने
मैं वस्तु बनकर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बंट गई पांचों में
धर्मराज का
जुए में हारना मुझे
हस्तिनापुर की राजसभा में
मेरा चीर हरण

पांच समरवीर पतियों के सामने
दंड था मेरे स्वीकार का
उतने ही दोषी थे पांचों पांडव
जितने कि अधर्मी कौरव

अग्नि परीक्षाएं
तुमने बनाई मेरे लिए
सती-प्रथाएं
तुमने चलाई मेरे लिए
चकले भी
तुमने सजाए मेरे लिए
बाज़ार भी
तुमने लगाए मेरे लिए

फिर क्यों न
तुम्हीं कहो कि
मुझ पर जुल्म
तुम क्यों करते हो?
और अपनी ही
करनी से
हार क्यों जाते हो?
कहो न,
यह रहस्य तुम्हीं कहो।

(दिसम्बर 1997)

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गोधूलि

सरसों फूली है
नाग केसर की सुगंध
बिखरी है
दाना चुगते पंछी
चहचहाते हैं
खेत लहलहाते हैं
मगर
गोधूलि की
घंटियों की आवाज़
सहमकर
सन्नाटे में छुप गई है

खेत को सींचता
कोई मिर्ज़ा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अब किसी साहिबां को
नहीं पुकारता
न कभी रास्ता रोकता
न हीर गाता
न कोई वंझली बजाता
चुपचाप चलता यंत्रवत
दायें-बायें से...
चौकन्ना रहता है

गोधूलि में
दनदनाते सुरक्षा बलों के
बूटों की आवाज़
आतंकवाद की
गोलियों की गड़गड़ाहट
में डूब गई है
चांदनी रात की ठंडक
और हवा से झूमते
पत्तों की सुरीली सरसराहट

कुत्ते घरों की
दहलीजों को सूंघते हैं
और [illegible] हैं
किस पर है उनका गुस्सा
उनकी यह झुंझलाहट?

शायद किसी अनिष्ट की
आमद का पूर्वाभास
उन्हें भी हो गया है
वह अनिष्ट
जो रात से पहले ही
संध्या की लाली
निगलकर सो जाता है।

(अप्रैल 1992)

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सपना

चुन्नू और मुन्नी
अब अनाथ नहीं होंगे
बूढ़े पिता
बे-सहारा भी नहीं होंगे
नहीं होगी विधवा
मेरी जवान पत्नी
परती पड़े खेत
नहीं तरसेंगे
मेरे हाथों के स्पर्श को

अब मैं
आतंकवाद के हाथों
चैन से मर सकता हूँ
राजा ने
यूं मरने का मुआवज़ा
एक लाख कर दिया है
मौत के बाद
तुरंत भुगतान का
आश्वासन भी दिया है

अब मैं
आतंकवाद के हाथों
चैन से मर सकता हूँ।

(अगस्त 1985)

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ये लोग

ये कौन लोग हैं
मेरे एकांत में
दिखाई देते हैं
रात में अखबारों की
सुर्खियां बनते
प्रभात में
अपने कंधों पर
अर्थियां उठाए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चुपचाप चलते हैं
दाएं-बाएं
आगे-पीछे
चौकन्ने से रहते हैं

नियति के
स्वीकार की भाषा
उनके माथे पर लिखी है
उससे लड़ने
और
लडाई जीतने की आशा
उनके तेज़ी से उठते
बढ़ते कदमों की चाप में सुनी है

ये जो हारे नहीं
थके नहीं
आंसुओं को
पलकों में दबाए

जूझ रहे है चुनौतियों से
अपमान का घूंट पीए
कभी धीमी
कभी तेज़ है
उनकी पदचाप
लरजते होंठ
कांपते नथुने
निरंतर चल रहे है

अर्थियां कंधों पर उठाए
ये मेरी ही धरती के लोग हैं
ये मेरी ही धरती के लोग है।

(मई 1992)

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्मृति शेष को

वह फूल बनी या तारा
मालूम नहीं
उसे बुलावा उस लोक से
'फूल या तारा बनने की
जोबन रुत में ही आया था'

नमिन्दर वालिया
नाम था स्फूर्ति का
चाहो का
संकल्पों का
इच्छाओं और महत्वाकांक्षाओं का

नारीत्व को
अर्थ देती वह
जीवन के अर्थ जानती थी
किसी भी संज्ञा
अर्थ-धर्म-काम और नाम
वह सभी से
परिचित सी लगती थी

उत्साह-साहस
कर्मठता-अथक प्रयास
उसकी जीवन शैली में
रूपांतरित हो रहे थे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

निराश होना
उसने नहीं सीखा था
ऐसी घड़ियों में
वह छुपकर रो लेती
फिर नए संकल्प के साथ
धरती पर पांव
जमाकर खड़ी हो जाती

घर के मोर्चे पर
सद्गृहणी, प्रियतमा
ममतामयी संरक्षिका
परिवेश की हर चुनौती का
दो टूक उत्तर थी वह

चलती पहाड़ी नदी सी
तेज गति से प्रवाहमान
राकेश वालिया नाम की
धुरी के चारों ओर
परिक्रमा करती
धरती थी वह
बदलते मौसमों का
सरमाया इकट्ठा करती
उपवन की तितली थी वह

फूलों का रस हो या गंध
चाहे वह था
मधुकोष का मधु
मधुमक्खियों के
दंश से डर जाना
उसने नहीं सीखा था

उसकी चेतना की
सूक्ष्म तरंगें सचेत रहतीं
और वह
हर संभावित खतरे से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जोड़-तोड़ की
कंटीली झाड़ियों से
बचकर निकल जाती
विरह के बीहड़ सन्नाटों को
कर्मठता से सहन कर जाती

हर पल को
उसने अर्थ देकर
जीना सीखा था
क्या पता था उसे
या किसी और को
कि उसके पास समय
है ही बहुत कम
और उसे
करना है बहुत कुछ
जो नहीं कर पाई
उस पर उसने कभी
विराम रेखा नहीं लगाई

नश्वर देह
मृत्यु की धरोहर है
उसकी निःशेष काया भी
जो अवशेष बनी
पर हारी नहीं मृत्यु से
नारीत्व निभाया
अमर हुई नन्हें से
इक जीवन को
धरती की गोद में उतार कर

स्नेहसिक्त, श्रद्धासुमन
अर्पित हैं उसकी
अशेष यादों को
उसके अधूरे इरादों को।

(मार्च 1988)

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इक्कीसवीं सदी के नाम

मेरी कलम
क्यों रुक गई
मैं नहीं जानती
बस इतना पता है
सत्ता के संरक्षण में
तंदूर जलता है
कोई मैना या मैना
झोंक दी जाती है उसमें

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अखबारों की
सुर्खियां चमकती हैं
काले हाशिए के साथ
गोलाकार भवन में
समाज के
कुछ सभ्य-शालीन प्रतिनिधि
सुर्खियों को
शोशे की तरह उछालते हैं
कुछ ख़ामोश रहते है
हत्यारे के बचाव के यत्न में
भागदौड़ करते हैं
बयान-दर-बयान दागते हैं
तंदूर के
कांटेदार इंधन में उलझे
अपने दामन के
छोर को बचाने के लिए

कल्याण योजनाओं की
घोषणा करते हुए नेता
जादूगरों की तरह
रंगीन रूमाल उड़ाते हैं
बूढ़ों के लिए पेंशन
बच्चों के लिए
मज़दूरी से निजात
पाठशालाओं में
जलपान की व्यवस्था
महिला कल्याण योजनाएं
कार सेवाएं बेकारों के लिए
वचत योजना
सुरक्षा योजना
और भी बहुत कुछ है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इनके झोले में
रंग-बिरंगे रेशमी
रूमालों पर लिखा हुआ

इसे पढ़ते हुए
गरज़मंद, ज़रूरतमंद
अक्लमंद सभी भूल जाएंगे
लपटों से भरे राजनीति के तंदूर
जघन्य अपराधों के
घिनौने धब्बे
उनके डिजाइनर कलैक्शन
उजले वस्त्रों पर
पड़े लहू के छींटे
छींट के नमूने दिखाई देने लग जाएंगे

चुप रहेंगे ज़हीन बुद्धिजीवी
कुछ उदासीन
कुछ भयभीत
साहित्य रचयिता
कला के चितेरे
क़लमों के जादूगर
कूटनीति के मर्मज्ञ
शब्दों के बाजीगर
भावी संभावनाओं को
निज हित में अंदाज़ते हुए
क्या किया जाए?
क्या हो सकता है?
की विशिष्ट गंभीर मुद्रा में

सोच का सिलसिला रुक गया
जब आई मेरे पास
एक और मृगनयनी मैना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लजाती शर्माती
बादामी आंखों में चमक लिए
''मेरी कुड़माई हो गई''
''किसके साथ -
कौन है वह खुशनसीब?''

''प्रदेश युवा मोर्चा का नेता है
सत्ताधारी पार्टी का कारकुन
लाल बत्ती वाली कार में
गार्ड के साथ घूमता है
'बड़े घर का काका' है
अफ़सरों पर दबदबा है
पहले उग्रवादियों का सरगना था
पीछे पड़ी रहती थी पुलिस
बचने का यही एक रास्ता था
होनहार है, चीकने पात वाला
भविष्य उज्ज्वल है
पापा कहते हैं, चाचा जानते हैं''

गर्व से फूली नहीं समाती
भावी पति के
गुणों का बखान करती
वह नहीं अघाती
मीठे सपनों में खो जाती
मेरी चुप्पी
उसे अच्छी नहीं लगती
मन चाहा कुछ
सुनने को वह आतुर लगती

पर मैं भी क्या करूं
दुल्हन बनने के सपने देखती
उस कमसिन लड़की के चारों ओर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कई तंदूर लपटों से भरे
मुझे दिखाई देने लगते हैं
कुछ कहते नहीं बनता
कलम छूट जाती है
मेरे हाथ से
कागज़ पर लिखे शब्द
अर्थहीन ध्वनियों के सिवा
कुछ नहीं होते
सार्थक लगते हैं कुछ सवाल
कनपटी पर
ठकठक दस्तक देते
उत्तर पाने के लिए
कई मौतें मरूंगी मैं

कलम फिर क्या करेगी
शायद, कुछ नहीं
कुछ भी, नहीं शायद

और मैं विवशता में
आस्तिक की तरह
हाथ उठाऊंगी
आसमान की तरफ
दुआ की मुद्रा में
ऊपर वाले बाज़ीगर के
अनुग्रह की आशा में
"उसकी बेआवाज़ लाठी की मार"
या उसके किसी नये अवतार
के भरोसे पर छोड़ दूंगी
सारे चिंतन और चिंताएं

काश, ऐसा हो जाए
काश, ऐसा ही हो जाए।

(दिसम्बर 1996)

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक ख़त : मिर्ज़ा ग़ालिब के नाम

सुनिए, दादा ग़ालिब
बहुत बदल गया है
अपना देश
अपना समाज,
इतिहास का मिज़ाज
बहुत बदल गए हैं
अपने मेले
अपने रीति और रिवाज़

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अब दिल्ली से कलकत्ता का सफ़र
कुछ घंटों में तय हो जाता है
तुम्हारी दिल्ली
अब कहीं ज़्यादा बड़ी
और खूबसूरत हो गई है
शहरों के बीच की दूरी
सिकुड़ रही है - पर
इन्सानों के बीच का फासला
बढ़ता जाता है
और बढ़ता जाता है।

आम अब हर मौसम में मिलते हैं
यहां कर्ज़ और शराब की
अब कहीं क़िल्लत नहीं है
अब किसी की औलाद
खुदा की मर्ज़ी से नहीं
सिर्फ मौत से मरती है
या मरती है उसके चाहने से
किसी शहर को अब
फिरंगी या बाग़ी नहीं लूटते
यूसुफ़ और जैराम
किसी फिरंगी की
गोली से नहीं मरते
मारने-फूँकने और
बेआबरू करने वाले हाथ
अब अपने ही आंगन में उग आते हैं

और आगे का हाल भी
सुनो दादा ग़ालिब
हर क़दम पर खड़ा है
अब यही एक सवाल
किसका कर लें हम विश्वास
किस पर लाएं हम ईमान
कौन है रहज़न

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कौन है रहबर
कौन है मसीहा
और कौन है शैतान
नहीं कर सकती अक़्ल भी
इनकी ठीक-ठीक पहचान
क्योंकि
दोनों का लिबास एक सा
सभ्य और शालीन हो गया है

मसीहा मांगता है लहू
प्यार से दुलार से
हड्डियां और मज्जा
शैतान हथिया लेता है
दाम से, आतंक से, छल से या बल से।

ऐसे में दादा जी
बहुत आती है तुम्हारी याद
और तुम्हारे वे हालात
क्योंकि आज
बहुत आसान है
हर काम का आसां होना
किसी आदमी का
हिन्दू या मुसलमां होना
पर आज भी आदमी को
'मयस्सर नहीं इन्सां होना।'

हां, दादा ग़ालिब
बहुत बदल गया है
अपना देश, अपना समाज
अपने मेले
अपने रीति और रिवाज़।

(फरवरी 1986)

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहानी सुख की क्यों नहीं होती?

पढ़ते-पढ़ाते
चर्चा करते
समीक्षा लिखते
अक्सर सोचती हूं कि
कहानी सुख की
क्यों नहीं होती
कहानी के हिस्से में
सुख क्यों नहीं
वह सुख से
अपरिचित क्यों है?

कहानी यथार्थ का
एक ही पक्ष
क्यों पकड़ लेती है
यथार्थ यह भी है कि सुख से जीवन
सदा वंचित नहीं होता
कि सुख
किसी भौतिक फार्मूले में
बंद नहीं होता
सुख व्यक्तित्व
सापेक्ष भी होता है
सुख भौतिक
परिभाषा के सिवा
मनःस्थिति भी होता है
सुख देने और

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

त्यागने में भी होता है
सुख किसी के लिए
'कुछ होने' में
सुख अनुराग और
वैराग में भी होता है

कभी-कभी संकल्प
और व्रत में भी सुख होता है
सुख अकेलेपन
और संयम में भी होता है

यथार्थ यह भी है
कि विकृति
सुकृति के संदर्भ से होती है
दुख की अनुभूति
सुख की वजह से होती है

फिर कहानी
क्यों चुनती है
दुख और विकृति ही
अपनी विषयवस्तु के लिए

क्या रचनाकार की
चेतना ही बीमार है
या नैसर्गिक सौंदर्य से
अपरिचित है वह
कहो न कहानीकार
तुम्हीं कहो
कहानी सुख की
क्यों नहीं होती
कहानी सुकृति से
अपरिचित क्यों हो गई है?

(फरवरी 1998)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अभिशप्त

क्यों सुनाते हो
मुझे प्रणय गीत
मै उजड्ड
खुरदरे हाथों वाला आदमी
कई हादसों से सहमा
अपनी नियति के
आघातों से बचता फिरता हूं

मैने दरबार नहीं देखे
मुशायरों की
रिवायतों से अनजान
वोट की ताकत से बेख़बर
बोतल से शराब नहीं
मै जिंदगी का
ज़हर पीता हूं

मशीनों के शोर से
पथराए मेरे कान
सुर नहीं
शोर ही सुन पाते हैं
शायरों के प्रेम के किस्से
मेरे नरक में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उन गगनचुंबी
इमारतों से लगते हैं
जिनकी आखिरी ईंट जोड़कर
मेरे वजूद के ज़र्रे
राजपथ पर बिखर जाते हैं

क्यों सुनाते हो मुझे
ऋषियों के अनमोल वचन
उनकी संस्कृति से अभिशप्त
अपने बलिदान का मारा
लक्ष्मीनारायण का परित्यक्त
अज्ञान से हारा
मैं तो एकलव्य हूँ

उनके वैभव से
मेरे लहू की गंध आती है
अनगिनत अंगूठे
ज़मीन पर
तड़पते दिखाई देते हैं
और
उग आता है मुझ में
नास्तिक के विश्वास का
तपता हुआ सूरज
मेरे हाथ
कुछ ज़्यादा ही सख्त हो जाते हैं

सुनाओ मुझे कोई
ऐसा युद्ध गीत
कि मेरा कर्म
मेरा भी उद्धार करे
उनका भी स्वीकार बने
जो मुझको अभिशप्त बनाते हैं।

(अप्रैल 1995)

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नन्हें भीखी के नाम

कारगिल की सीमाओं पर
ऊंची बर्फीली चोटियों
की रक्षा करते
वीरगति पाने वाले
सैनिक की संतान हो तुम

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हां सैनिक
जो सीखता है, उम्र भर
एक शब्द—देश
जानता है—एक कर्तव्य
सुरक्षा देश की
देखता है—एक सपना
देश की स्वतंत्रता
ऐसी सीख को
अर्थ देने वाले
वीर की संतान हो तुम

आज बौराए से खड़े हो
वीरगति पाए
सैनिक पिता की चिता के पास
अग्निशिखा
हाथ में लिए

कई प्रश्न
तेरी मासूम आखों में
कई आश्चर्य
तेरे कोमल चेहरे पर
वेदना से सिले होंठ
बचपन की
दहलीज पर खड़े
अग्निपरीक्षा दे रहे हो तुम :
हम दुख के साथ
गौरवान्वित हैं
गले में अटके आंसुओं के साथ
मना रहे हैं विजयपर्व
आज हम पढ़ रहे हैं
तेरे बचपन के
माथे पर लिखा
इस देश का सुरक्षित भविष्य

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुझे मिलेंगे,
तेरे सवालों के जवाब
बड़ा होने के साथ-साथ
बढ़ेंगी तेरी परेशानियाँ
जब झेलनी पड़ेंगी
हृदयहीन राजनीति की बेईमानियाँ

यह जान ले कि तू
इस दुर्ग में अभिमन्यु है
और वीरगति तेरा अंजाम है
अपने पिता की विरासत का
वारिस है तू

मिलेंगी तुझे
राजनीति की अनीति से
अभिशप्त जनता की दुआएं
शहीद रूहों का आशीर्वाद
और मिलेंगी
तेरी माँ की आशाएं
जो इस धरती पर जन्मी
यहीं बहू बनी
इसे ही अपना सुहाग
अर्पित कर
यहीं विधवा हुई
पर हम दे नहीं सकते
उसे सत्ता में
सम्मानित भागीदारी
क्योंकि वह
एक वीर सैनिक की विधवा है
पर नहीं...?
उसे हमारा सलाम देना

इस देश की
यह रिवायत है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जो उसके लिए
लहू बहाता है
भुला दिया जाता है
जो लहू पीना जानता है
वह पीढ़ियों तक
सत्ता का सुख पाता है

ऐ नन्हें एकलव्य
आज की राजनीति में
देश कहीं नहीं
उसके केन्द्र में है

सत्ता का सुख
जंगल में दंगल शुरू हो गया है
कई भालू-भेड़िए
और लठैत
भयावह शक्लों वाले दैत्य
गली-गली डोलने लगे हैं
शोर जितना बढ़ेगा
उनकी जीभ
उतनी ही लपलपाएगी
दंगल के अखाड़े गरमाएंगे
बड़े से बड़े
दुष्ट पहलवान उतारे जाएंगे
एक अनाड़ी लोमड़ी
सब पर नज़र रखेगी
और चुपके से
घात लगाकर
इन पर हमला करेगी
कभी देशभक्ति का स्वांग भरेगी
कभी वैधव्य का रोना रोएगी
कभी फूट के बीज बोएगी
कभी इतिहास को झुठलाएगी
और कभी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जहरीली भाषा बोएगी
फिर वाद-प्रतिवाद
घात-प्रतिघात का विष
इस शस्य-श्यामला
धरती के मौसमों में भर जाएगा

इस खूंखार खेल में
जनता पिस जाएगी
पर कोई विकल्प नहीं पाएगी
वह मंहगाई के
बोझ तले दब जाएगी
सत्ता की ऐयाशियों को झेलेगी
आयकर-विभाग से भय खाएगी
सच, तब उसे
तेरे पिता सहित कारगिल के
वीरों की बहुत याद आएगी

भीखा! देख
तू कल बड़ा होगा
'जवान' होगा
तू सावधान रहना
विरासत
तेरे वीर पिता ने छोड़ी है
उसको याद सदा याद रखना
शायद, कोई द्रोणाचार्य
तेरा भी 'अंगूठा' मांग ले
पर तू ठुकरा देना
इस परंपरा को
रखना अपना अंगूठा
अपनी कमान के तीर पर
ज़रूरत पड़े तो
द्रोणाचार्य का वध कर देना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हां, एकलव्य
ये केवल अंगूठा नहीं
प्राण, लहू और अस्थियां
भी मांगेंगे
तेरा शील भंग करने से
भी नहीं हिचकिचाएंगे
ये भ्रष्टाचार, हत्या
दंगे-फ़साद, आतंकवाद का
पाठ भी पढ़ा सकते हैं
सब कुछ इनकी
ज़रूरत पर निर्भर करता है

देश को दांव पर
लगाना पड़े तो लगाएंगे
अपने ज़मीर को भी
गिराना पड़ा तो गिराएंगे
क्यों न हो, आख़िर राजनीति है
सत्ता हथियाने का प्रश्न है
सत्ता में रहने का मसला है
पर भीखा!
सैनिक की तरह
तू अपना
कर्तव्य याद रखना
हम तेरी नन्ही आंखों में
अपना देश देख रहे हैं
अपना भविष्य ढूंढ रहे हैं
इतिहास से
अभिशप्त भारतवासी
अपनी पहचान ढूंढ रहे हैं
वही पहचान
जो तेरे वीर पिता ने छोड़ी है।

(अगस्त 1999)

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धुंध

धुंध-भरा मौसम
कितना सुखदायी
सागर ज्यों लहराए
स्पर्श का सुख दे
किनारों पर ठिठकी रेत को

बदन को चीरती सी सरदी
मदिरा सी मादक है
धरती को भिगोती
वनस्पति को चूमती ओस
किसी मेहरबान सी लगती है
धुंध की चादर ने
मेरे शहर का
कूड़ा-कचरा
नयी बनी सड़क के घाव
बिखरी हुई अस्थियां
रिक्शा खींचते
चालकों के बदन का मैल
वाहनों की मरम्मत करते
कारीगरों की तैलीय कालिमा
बदरंग पुरानी
इमारतों के दाग़
नालियों में अंटी गंदगी
सब को ढांप लिया है

वह विश्वसनीय है
किसी डिप्लोमेट की गंभीरता
और घुटे हुए
राजनेता की मुसकान की तरह।

(जनवरी 1998)

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुनो मतदाता

देश एक
पार्टी नहीं होता
देश कोई
खानदान विशेष नहीं होता
देश राजनीति
भी नहीं होता
देश जाति
या धर्म नहीं होता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम्हारे हित-साधन का
सतरंगी इन्द्रधनुष
है देश
सात रंग ही इन्द्रधनुष को
इन्द्रधनुष बनाते हैं

ऐ मतदाता!
इन्हें जुदा-जुदा
करके नहीं देखना
बांटने-तोड़ने वाली अवसरवादिता से
सावधान रहना
देश तुम हो
मताधिकार तुम्हारा
तुम्हारा आज
तुम्हारा कल भी है

ऐ मतदाता
तुम्हारा लोभ
तुम्हारा बिकाऊपन
याद रहे
तुम्हारी नसलों के
गले का फंदा बनेगा
तुम समय रहते चेतना
अपनी भावी संतानों को
देर तक देखना
दूर तक देखना

ऐ मतदाता!
सोचना और समझना
कि इतिहास
केवल 'आज' नहीं होता।

(मई 1998)

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रश्नों में घिरा प्रजातंत्र

बुलेटप्रूफ गाड़ियों में सवार
सुरक्षा बलों की
बंदूकों से आरक्षित
काले शीशों वाली कार में
बैठा लोकप्रिय नेता
चेहरा छिपाए
लाउड-स्पीकर पर भाषण देता है
"निडर होकर वोट के
अधिकार का उपयोग करो
आतंकवाद के विरुद्ध
लोकप्रिय सरकार का गठन करो"
जो जितना ज़्यादा डरता है
वह उतनी ही ज़्यादा
ऊँची आवाज़ में
निडरता की बातें करता है

राजधानी में मिलं जाएगा
एम.पी.कोटे का सरकारी क्वार्टर
कट जाएंगे पांच साल
सरकारी सुविधाओं पर
इलेक्शन जीतना है
फिर क्या, फिर तो
आम के आम गुठलियों के दाम
वोटरों का क्या
उनका वक्त गुज़रता है
गुज़रता रहेगा

झूठ-दर-झूठ बोल रहे हैं
राजधानी में बैठे शहनशाह
बदले हुए वक्त का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बदला हुआ मिज़ाज
देखने या सुनने का साहस
उनमें नहीं है

अपनी नाकामियों का दोष
पड़ोसी के खाते में डालकर
वे भी 'टाइमपास' की सोचते हैं
जन साधारण का ध्यान बंटाने को
नित नई तरकीबें
ईजाद कर लेते हैं
बुद्धिजीवी की जुबां-बंदी
जलसे-जुलूसों पर पाबंदी
हुकुम सरकारी
मुस्तैदी से बजता है
निष्पक्ष चुनाव की आड़ में
पक्षपात ही पलता है
शतरंज बिछी है
घोड़ा, हाथी हो या प्यादा
सब चलता है

बैंक, स्कूल, कार्यालय
बाज़ार, अस्पताल, विद्यालय
सब बंद कर दिए गए हैं
हर मोड़, हर चौराहे पर
सशस्त्र सुरक्षा बल
तैनात कर दिए गए है
पक्षपाती चुनाव के
सभी साधन जुटा लिए गए हैं
आतंकवादियों से
अब कोई ख़तरा नहीं
वे सब जो खतरनाक थे
सरहद पार चले गए हैं
बाकी जेलों में भर दिए गए है
(मक़सद पूरा होते ही

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वे पार पहुंचा दिए जाएंगे)
विरोधी जनतंत्र का हिस्सा नहीं
पर जनतंत्र
शासनतंत्र का हिस्सा है
राजहठ और बालहठ
ज़ोर-आज़माई दोनों तरफ
बीच का रस्सा
सामान्य जन
अपमानित, शोषित, खंडित जो घिस रहा है
खिंच रहा है, टूट रहा है।

शहर में अघोषित कर्फ्यू
घोषित बंद
कारोबार, जीवन ठप्प
गतिहीनता, मतिहीनता
बस शक्ति-प्रदर्शन
राजहठ और राजसत्ता
सिसकती मानवता
मिट रही राष्ट्रीयता
टूट रहा अखंड भारत का संकल्प
जर्जर हो रहे
लोकतंत्र के सारे उसूल
जीर्ण होते
महिमा-मंडित नैतिक सिद्धांत
ऊंचे-ऊंचे भवनों
और गगनचुंबी अट्टालिकाओं के
साये में लुटती
मनुष्यता की अस्मिता
देश का गौरव
बनाम सत्ता का दम्भ
करेगा देश की
विविधता को खंड-खंड

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बड़े बोलों के पीछे
गूंजता एक भयावह शून्य
निगल जाएगा
इक्कीसवीं सदी का भविष्य
खंड-दर-खंड बंटता
यह समाज हो जाएगा
अराजक झुंडों का समूह
झपटते एक दूसरे पर
मारते-लूटते एक दूसरे को
लौटते अपने
आदिम अतीत की ओर

मानव-संस्कृति को
दफ़न होते खंडहरों में
देखने का संताप
भोगते चंद ज़हीन लोग
जो चुपचाप निःस्वार्थ भाव से
खटते रहे उनके लिए
विवशता में बन गए है मूक दर्शक

शासकों की भीड़ में
अब कोई एक चाणक्य
शायद नहीं बदल सकता
इस स्वतंत्र राष्ट्र की
नियति को, परिणति को

वे कहते है
असंतुष्ट थोड़े से है
भस्म हो जाएंगे
चरित्रहनन के लाक्षागृह में
सिद्ध कर दिए जाएंगे देशद्रोही
बहुमत की अदालत में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

असीम ताकत है
उनके पास, फिर भी
बहुत कुछ नहीं होता
उनकी इच्छा के अनुसार
जन साधारण का रोष
अनकही पीड़ा और
अविश्वास की स्तब्धता में
ढह जाएगा
उनका समूचा कुटिल तंत्र
नाकारा हो जाएंगे
उनके दूरदर्शनी आयुध
जनतंत्र जब उठेगा उनके विरुद्ध
अभेद्य रक्षाकवच भी
नहीं बदल पाएंगे
किसी सिकंदर की नियति को

नहीं मिटा पाएंगे 'उन्हें' वे
जो उनके जैसे हैं
नहीं बचा पाएंगे 'उन्हें' वे
जो हमारे जैसे हैं
उनके कंधों पर सवार हैं 'वे'
इनका धड़ जनसाधारण के
सिर पर औंधा पड़ा है
और इनके पैर
पीट रहे हैं उसके पेट को
अभिशप्त राजनीति
के कारागार में
बंद है उसकी आवाज़
क्रिया-प्रतिक्रिया के चक्रव्यूह में फंसा
वह देख रहा है
फटी-फटी आंखों से
संकर संस्कृति के खंडहरों में
खोज रहा है निकलने का रास्ता
आत्मविश्वास के साथ
वह बूझ रहा है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समय की पहेली को
धूर्तों का अखाड़ा बनी देहली को

किसने जोड़ा है उसे
जिसे जनसाधारण तोड़ता है
कब पाता है वह अधिकार
जो कर्तव्य से मुंह मोड़ता है
पूछो अपने इतिहास से
और पूछो मिथिहास से
जनता का चीर हरण
दे रहा है मौन निमंत्रण
ध्वंस को, महाविनाश को
राजवंश के सर्वनाश को
जिनकी आंखों से सपने
बचपन का भोलापन
यौवन की हया जिन्होंने छीनी है
विश्वासघात किया है
उनके दिन-रातों के साथ
मिट्टी की संतानों से
आने वाली सदी के नाम पर
सब्र-संतोष और अमन
के नाम पर, वे अपनी
जय-जयकार की उम्मीद न रखें

क्योंकि वे
जन्म ले रहे है हिंसा में
पल रहे है हिंसा में
न्याय की सीता का बनवास
वे अपने तन पर भोग रहे है
मूल्यों की धज्जियां
तुम्हारे हाथों उड़ते देख रहे हैं
आने वाली सदी में
लहूलुहान संस्कृति के वारिस है वे।

(जून 1992)

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ध्रुवतारा

तारों में सबसे
चमकीला तारा
मां कहती थीं
सदा अटल रहता है

बाबा ने बताया
इससे
अनुमान होता था
समय का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दिशाओं का
ध्रुव
साक्षी था
निरंतरता का
परम सत्य का
किन्तु
मेरे युग का आकाश
मशीनी तारों से
भर गया है
तारे
जो सदा बनते
और टूटते रहते हैं

इस आकाश पर
कुछ भी
ध्रुव नहीं
बहुत से
धूमकेतुओं के सिवा
इस युग की
संस्कृति के
सभी तत्व
धूमकेतुओं की
दुम से बंध गए है
ध्वस्त होने को तैयार

डर लगता है मुझे
ध्रुवतारा देखेगा
प्रलय का
अटल सत्य
विध्वंस की
पिशाच लीला।

(अगस्त 1985)

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

थोड़ा इन्तज़ार...

गुलाब फिर खिलेंगे
हवाएं महकेंगी
बस थोड़ा इन्तज़ार
तूफान के गुज़रने तक
इतिहास का
मिज़ाज बदलने तक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उदास न हो
निराश न हो
समय की आंखों में
आंखें डालकर
चलते रहो
निरंतर चलते रहो

मौसम बदलेगा
खुशबू लुटाती
बहारें आएंगी
मौन खड़े दरख्तों से
तुम्हारा पता पूछेंगी

अपनी धरती पर
हल से अपना पता लिख दो
बंदूक की संगीन पर
अपनी शुभ्र पताका लहरा दो

इतिहास गवाही देगा
तुम्हारे जीवट की
तुम्हारी विजय की
विमल गाथा दुहराएगा
पदचिह्नों पर फूल चढ़ाएगा

बस थोड़ा इंतज़ार
बस थोड़ा इंतज़ार
तूफान के गुज़रने तक
इतिहास का मिज़ाज बदलने तक।

(जुलाई 1989)

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सदा याद रखना

टाइगर हिल
और टोलोलिन की पहाड़ियों
सदा याद रखना
मेरी मां जाए उन वीरों को
तुम्हारे दामन से
जिन्होंने, दुश्मन के
मैले इरादों के दाग़
अपने गर्म लहू से धोए हैं

तुम्हारी अस्मिता की
रखवाली में
जो तोड़ गए
अपने बूढ़े पिता की लाठी
संतान का सहारा
मिटा गए
बीवी की मांग का सिंदूर
लुटा गए
अपनी भरी-पूरी जवानियां

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम बताना इतिहास को
उनके बलिदानों
और सूरमताई की
सच्ची-मुच्ची कहानियां

तुम गवाही देना
उनकी उस बेबसी की
दम तोड़ते वक्त
जिन्हें न हुआ नसीब
किसी साथी का कांधा
सर्द होती खुली आंखों को
किसी अपने की हथेलियां

अनकहा ही रहा
विदा से पहले
जो कहना था उनके
अपनों से
उन राहों से
जो शाम ढले
हर रोज़ लौटती हैं
उनके घरों की तरफ़

घर, जिनके
खुले किवाड़ों से
झांकती है
कई जोड़ी आंखें
बूझती हैं
ज़िन्दगी की
अनबूझ परेशान सी पहेलियां।

(जून 1999)

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सिद्ध मैं....?

अपनी बुलंद खुदी के साथ
नास्तिक था मैं
सोलह कलाओं का स्वामी
कृष्ण था मैं
निर्भय आत्मनिर्भर
युद्धरत, स्वयंसिद्ध
अस्मिता में
बुद्ध था, मंसूर था मैं

मैं इकबाल था
अपनी खुदी में
खुदा मेरी
मर्ज़ी के आधीन था

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भय को ललकारता
धर्म को धिक्कारता
कार्ल मार्क्स था मैं
मैं ग़ालिब था
जब खुदा नहीं था
तब मैं ही था

मेरा विकास हुआ
या पतन
मैं नहीं जानता
अस्मिता की
बुलंदियों से गिरा
अपने बनाए
बुतों की शरण में पड़ा
सर पटकता
गिड़गिड़ाता हूं मैं
प्रभु! त्राहि माम्, त्राहि माम्।

अब वह नहीं हूं 'मैं'
अपने रूपान्तर में
खुदगरज़, खुदापरस्त
सच्चा-खरा
आस्तिक हो गया हूं 'मैं'

खुदा के नाम पर
राम के लिए 'मैं'
कुछ भी कर सकता हूँ
कुछ भी .....
कई दायित्व है मेरे
पाप भी पुण्य है मेरे
क्योंकि मैं
धर्म का रक्षक हो गया हूँ।

(मई 1993)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Educ... Jammu

डॉ. कीर्ति केसर

जालन्धर (पंजाब) में जन्मी कीर्ति केसर की प्रारम्भिक शिक्षा श्री गोला गोकरण नाथ, खीरी में हुई। आगरा विश्वविद्यालय से एम.ए. तथा मेरठ विश्वविद्यालय से पी–एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। हाल ही में अध्यापन कार्य से सेवामुक्त हुई हैं।

प्रकाशित कृतियां

- स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी का समाज सापेक्ष अध्ययन (आलोचना)
- समकालीन हिन्दी कहानी के विविध संदर्भ (आलोचना), पुरस्कृत
- आज की पंजाबी कहानियां (अनुवाद व संपादन)
- मुक्त कर दो (कविता संग्रह)
- मिर्जा गालिब अपने खतों में
- पाश का साहित्य
- पंजाबी साहित्य के विविध संदर्भ (प्रकाशनाधीन)
- साहित्य: इक्कीसवीं सदी की चुनौतियां (प्रकाशनाधीन)

कई संग्रहों में शोधात्मक एवं आलोचनात्मक लेख संकलित हुए हैं। कविताएं तथा साक्षात्कार साहित्यिक पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। पंजाबी की श्रेष्ठ रचनाओं (नाटक, कहानियां, कविताएं) के अनुवाद श्रेष्ठ पत्रिकाओं तथा संकलनों में संकलित हुए हैं। साहित्य मंच पंजाब का चार वर्ष तक संयोजन किया।

टैलीफिल्म

दूरदर्शन के लिए 'क्रांतिनाद', भगत सिंह के जीवन और जीवनदर्शन से संबंधित स्क्रिप्ट लिखी। 'बैसाखी' टैलीफिल्म राष्ट्रीय प्रसारण में प्रसारित हुई। 'गीतां दा सुलतान शिव बटालवी' सीरियल लिखा जो दूरदर्शन से तीन किश्तों में प्रसारित हुआ।

पुरस्कार

'हिन्दी कहानी के विविध संदर्भ' और 'आज की पंजाबी कहानियां' पुस्तकें भारत सरकार द्वारा 1987 और 1993 में पुरस्कृत।

केवल विग फाउंडेशन द्वारा केवल विग अवार्ड 99

दलित साहित्य अकादमी, दिल्ली द्वारा डॉ. अंबेडकर फेलोशिप अवार्ड– 99

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अभिव्यंजना, नयी दिल्ली

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant